भाषा की उत्पत्ति पर वाक्युद्ध

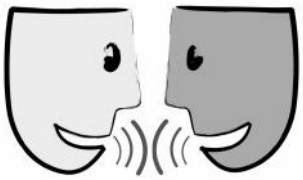

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

सौ से ज़्यादा प्राचीन व समकालीन इंडो-युरोपीय भाषाओं के मूल शब्द भंडारों के अध्ययन से पता चलता है कि इंडो-युरोपीय भाषाओं की पूर्वज भाषा की उत्पत्ति एनाटोलिया यानी एशिया माइनर में हुई थी, जो आजकल का तुर्की है।

इंडो-युरोपीय भाषाओं की पूर्वज भाषा की उत्पत्ति कहां हुई और इसमें से जर्मन, इतालवी, रूसी, फारसी, हिन्दी आदि विविध भाषाएं कैसे पैदा हुई?

हैदराबाद विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति प्रोफेसर भद्रीराजू कृष्णमूर्ति के निधन के साथ ही भारतीय भाषाओं के विद्वत्तापूर्ण विश्लेषण का एक युग समाप्त हो गया है। उनकी किताब *दी द्रविडियन लैंगवेजेस* में द्रविडियन भाषाओं की उत्पत्ति, विकास और विविधता का सटीक विवरण प्रस्तुत हुआ है।

उन्होंने ही मुझे आनुवंशिकी विशेषज्ञ ल्यूगी केवेली-स्फोर्ज़ा के इस मत से परिचित कराया था कि आनुवंशिक वंशवृक्ष और भाषा वृक्ष में कई समानताएं हैं। और उन्होंने ही मुझे इन मान्यताओं के बारे में सोचने को प्रेरित किया।

यह सच है कि डीएनए वह बीज है जिसके आधार आनुवंशिक वंशवृक्ष विकसित हुआ है, फला-फूला है और विविधतापूर्ण बना है। इसी तरह शब्द एक बीज है जिससे भाषा बनती है, विकसित होती है और संख्या वृद्धि करती है। जिस तरह से जीन्स डीएनए के क्रम होते हैं और जीन्स का संग्रह (जीनोम) सजीव की रचना को निर्धारित करता है, उसी तरह शब्द, वाक्यांश, वाक्य और व्याकरण भाषा को परिभाषित करते हैं।

जिस तरह से जीवों का विकास अपने पूर्वजों से हुआ है, उसी तरह भाषाएं भी किसी पैतृक भाषा या "प्रोटो भाषा" से विकसित हुई हैं। सवाल यह है कि इंडो-युरोपीय भाषाओं के पूर्वज यानी प्रोटो-इंडो-युरोपीय भाषा की उत्पत्ति कहां हुई और जर्मन, इतालवी, रूसी, फारसी और हिन्दी जैसी विविध भाषाओं का विकास कैसे हुआ। यह फिलहाल विवाद का मुद्दा है या यों कहें कि इस पर वाक्युद्ध जारी है।

इस सम्बंध में हाल ही में ऑकलैण्ड विश्वविद्यालय, न्यूज़ीलैंड के डॉ. क्वेन्टिन एटकिन्सन और उनके साथियों ने *साइंस* के अंक में एक पर्चा प्रस्तुत किया है जिसमें प्रोफेसर कृष्णमूर्ति की भी गहरी रुचि थी।

एटकिन्सन ने ल्यूगी केवेली-स्फोर्ज़ा के उसी विचार को आगे बढ़ाया है और इंडो-युरोपीय भाषाओं की उत्पत्ति के अध्ययन में उसी सांख्यिकी पद्धति का उपयोग किया है जो जैव विकास के अध्ययन में इस्तेमाल होती है। जैव विकास के अध्ययन में हम डीएनए अणु के क्रम से शुरू करते हैं यह देखने की कोशिश करते हैं कि समय के साथ-साथ इसमें कैसे परिवर्तन होते हैं और नई प्रजातियां अस्तित्व में आती हैं।

दूसरा उतना ही प्रभावी तरीका यह है कि हम किसी वर्तमान समूह, जैसे स्तनधारियों के डीएनए (जीनोम) से शुरू करें और फिर पीछे लौटते हुए देखें कि विकास के क्रम में कहां-कहां इनमें विविधता पैदा हुई और कुत्ते, बिल्ली, गाय-भैंस और मनुष्य जैसी विभिन्न प्रजातियां बनती गईं।

भाषा विज्ञान में हम मूल शब्दों (प्रोटो-शब्दों) से शुरू करते हैं। ये वे मूल शब्द हैं जिनसे विविधता की उत्पत्ति हुई है। उदाहरण के तौर पर प्रोटो-इंडोयुरोपीय शब्द 'मेहटर' हिन्दी में मां या माता, जर्मन में मुटर, लेटिन में माटेर, रूसी में माट और फारसी में मादर हुआ।

एटकिन्सन ने इसी तरह के सजातीय शब्दों के साथ शुरुआत की और सभी शब्दों को एक-एक अंक दिया। जब इन सजातीय शब्दों का स्थान किसी अन्य शब्द ने ले लिया तो इन्हें शून्य अंक दिया गया। इस द्विअंकीय स्कोर के आधार पर उन्होंने उसी सांख्यिकी पद्धति का उपयोग किया जिसके ज़रिए डीएनए क्रम का विश्लेषण करके

वायरस महामारियों की खोजबीन हुई थी।

103 प्राचीन या समकालीन भाषाओं के मूल शब्द भंडार के डैटा का उपयोग करके उन मूल बिंदुओं का पता लगाया गया है जहां से भाषाएं अलग-अलग होना शुरू हुई थीं। इसका परिणाम यह निकला कि प्रोटो-इंडो-युरोपीय भाषा की शुरुआत एनाटोलिया या एशिया मायनर से हुई थी जो आजकल का टर्की है।

साइंस में प्रकाशित अपने शोध पत्र में एटकिन्सन कहते हैं "हमें इस बात के निर्णायक प्रमाण मिले हैं कि (प्रोटो भाषा की) उत्पत्ति घास के मैदानों (स्टेपीज़) की बजाय एनाटोलिया में हुई है। इंडो-युरोपीय भाषा वृक्ष के समय और उसके मूल स्थान सम्बंधी अनुमान एनाटोलिया से कृषि के विस्तार से मेल खाते हैं जो करीब 8000-9500 वर्ष पूर्व शुरू हुआ था।"

ऊपर दिए गए दो शब्द 'घास के मैदानों' और 'कृषि' पर गौर करें। ब्रिटिश पुरातत्त्ववेत्ता कोलिन रेनफ्रू ने 1987 में ही कहा था कि कृषि और भाषा का प्रसार साथ-साथ हुआ है।

जब शिकारी-संग्रहकर्ता समुदाय से कृषि समुदाय बना, तो एक सुगठित समाज अस्तित्व में आया जहां समुदाय के अंदर और अन्य समुदायों के साथ गहन अंतर्क्रिया होती थी। जब ये समुदाय फैले या अन्य जगहों पर भी ऐसे समुदाय बने, तो संप्रेषण में सक्रियता आई और भाषा का विकास शुरू हुआ।

अन्य प्रमाण दर्शाते हैं कि इंडो-युरोपीय भाषा क्षेत्र में कृषि का विकास एनाटोलिया में हुआ था और वह भी मात्र 9500-10000 साल पूर्व। ऐसा माना जाता है कि यहीं से कृषि पूरब और पश्चिम दोनों तरफ फैली। जैसे-जैसे नए-नए कृषि समुदाय बने, भाषा में भी विविधता बढ़ती गई।

इस व्याख्या से सब सहमत नहीं हैं। एटकिन्सन के शोध पत्र के ऑनलाइन प्रकाशन के चंद घंटों के भीतर ई-मेल और ब्लॉग पर वाक्युद्ध शुरू हो गया। इस सम्बंध में दूसरा सिद्धांत यह है कि प्रोटो-इंडो-युरोपीय भाषा की उत्पत्ति पश्चिम एशिया में केस्पियन क्षेत्र में हुई। इसे स्टेपीज़ भी कहते हैं - स्टेपीज़ यानी दक्षिण-पूर्वी युरोप और एशिया का समतल मैदान जहां पेड़ नहीं हैं और वह घास से पूरी तरह ढंका हुआ है।

यह एक विशाल क्षेत्र है जिसमें एक तरफ मध्य एशिया का ठंडा प्रदेश - युक्रेन, तुर्कमेनिस्तान से कज़ाकिस्तान (जिसे रेशम मार्ग कहते हैं) और दूसरी तरफ उष्णकटिबंधीय भारत और पश्चिम एशिया प्रदेश शामिल है। वर्तमान सिद्धांत यह है कि प्रोटो-इंडो-युरोपीय भाषा की उत्पत्ति केस्पियन सागर के निकट हुई है। यह सिद्धांत भी सजातीय शब्दों के विश्लेषण पर आधारित है और उत्पत्ति का काल 6000 साल से पहले का बताया जाता है।

शब्द जैसे 'ड्यूस' जो हमारे यहां शायद देवा हुआ, एक्वास (घोड़ा) जो शायद अश्व बना, गाय के लिए मूल शब्द गाउस परिवर्तित होकर गौ बना वगैरह। इसके पीछे विश्वास यह है कि भाषा कृषि के साथ नहीं बल्कि विजय पताकाओं के साथ फैली है, बीज के ज़रिए नहीं, तलवार के ज़रिए फैली है, हलधरों के ज़रिए नहीं, घुड़सवारों के ज़रिए फैली है।

आंध प्रदेश के ज़्यादातर हिस्से में तेलगू बोली जाती है, जो इंडो-युरोपीय भाषा परिवार का ही हिस्सा है। लेकिन उसके दक्षिण के राज्य में बोली जाने वाली भाषा तमिल की उत्पत्ति अभी भी राज़ बनी हुई है।

ऐसा लगता है कि तमिल का फिनिश, हंगेरियन और बास्क जैसी तमाम भाषाओं से कुछ सम्बंध है। और मलयालम, जो तमिल से समानता रखती है, के कुछ शब्द फिनिश के समान है। उदाहरण के तौर पर टोकरी शब्द को मलयालम में वट्टी कहते हैं और फिनिश में वाटिन, फूल को दोनों भाषाओं में पू कहते हैं, घर को क्रमशः कूडी और कोटी कहते हैं। तो यह एक अनसुलझी गुत्थी है और इसे सुलझाना भाषा वैज्ञानिक कृष्णमूर्ति के लिए उपयुक्त श्रृद्धांजलि होगी।

(स्रोत फीचर्स)